नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित

वर्धा, दि 20 फरवरी : प्रख्यात आलोचक, विश्वविद्यालय के पूर्व कुलाधिपति प्रो. नामवर सिंह के निधन पर महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय में बुधवार को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। विश्वविद्यालय के प्रशासनिक भवन में कार्यकारी कुलपति प्रो. एल. कारुण्यकरा की अध्यक्षता में हुई शोक सभा में विश्वविद्यालय के अध्यापक, अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

शोक सभा में कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र द्वारा भेजे गये शोक संदेश का वाचन कार्यकारी कुलपति

प्रो. एल. कारुण्यकरा ने किया। उन्होंने कहा कि आचार्य नामवर सिंह हिंदी के महान स्तम्भ थे। एक समर्पित अध्यवसाय सम्पन्न आलोचक के रूप में उनकी कीर्ति सभी हिंदी अध्येताओं के लिए स्पृहनीय बन गई थी। परम्परागत शास्त्र और समकालीन चिंतन की सरणियों दोनों में उनकी समान गति थी। उनकी अनुपस्थिति से हिंदी अध्ययन और समीक्षा में अपूरणीय रिक्ति पैदा हुई है। इस विश्वविद्यालय के साथ उनका विशेष जुड़ाव था और इसकी संरचना में उनका उल्लेखनीय योगदान रहा है। एक लम्बी अवधि तक वे कुलाधिपति के रूप मार्गदर्शन देते रहे। कुछ समय पूर्व नब्बे के नामवर शीर्षक पुस्तक प्रो. के.के. सिंह के सहयोग से सम्पादित कर प्रकाशित हुई थी। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल पर आयोजित संगोष्ठी में उपस्थित हो कर उन्होंने महत्वपूर्ण स्थापनाएँ प्रस्तुत की थीं। हम सब पर उनका स्नेह था। हम कृतज्ञता पूर्वक उनका स्मरण करते हैं। हमारी विनम्र श्रद्धांजलि। प्रो. कारुण्यकरा ने कहा कि डॉ. नामवर जी जमीन से जुड़े विद्वान थे। उनके सामान्य व्यवहार से हर कोई प्रभावित होता था।

कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि ने कहा डा. नामवर सिंह का बीती रात अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान दिल्ली में निधन हो गया है। वे पिछले कुछ दिनों से अस्वस्थ थे। डा. नामवर सिंह का जन्म चंदौली (पूर्व जनपद वाराणसी) के एक गांव जीयनपुर में हुआ था। उनकी पढ़ाई उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी और काशी हिंदू विश्वविद्यालय में संपन्न हुई। वे हिंदी के यशस्वी विद्वान आचार्य प्रसाद द्विवेदी के योग्य शिष्य थे। उन्होंने उन्हीं के निर्देशन में 'पृथ्वीराज रासो की भाषा' पर महत्वपूर्ण शोध कार्य किया है जो प्रकाशित व प्रशंसित है।

उन्होंने कहा कि नामवरजी एक बेहद कुशल अध्यापक, प्रतिभाशाली आलोचक और मूर्धन्य संस्कृति चिंतक के रूप में सर्वदा स्मरणीय रहेंगे। उन्होंने अपने चिंतन व लेखन से हिंदी जगत का माथा ऊँचा किया है। उनकी उपस्थिति से हमेशा हिंदी भाषा और साहित्य का लोक भरा-भरा रहा करता था।

डा. नामवर सिंह हमारे विश्वविद्यालय के दो बार कुलाधिपति भी रहे हैं। कुलाधिपति के रूप में दायित्व निर्वहन करने हुए उन्होंने विश्वविद्यालय की अकादमिक प्रगति के लिए सदैव तत्परता दिखाई। हिंदी के यशस्वी आलोचक के रूप में उन्होंने साहित्य में प्रगतिशिल दृष्टि का विकास किया। उनकी ख्याति को अक्षुण्ण रखने वाली उनकी पुस्तकें छायावाद, कविता के नए प्रतिमान, इतिहास और आलोचना, आधुनिक साहित्य की प्रवृत्तियाँ, कहानी: नई कहानी, दूसरी परंपरा की खोज, वाद विवाद संवाद, हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग व पृथ्वीराज रासो की भाषा आदि सर्वदा हिंदी के सहृदय पाठकों की स्मृति में सुरक्षित रहेंगी।

डा. नामवर सिंह ने अपना संपूर्ण जीवन हिंदी भाषा, साहित्य व भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के उद्यम में लगा दिया था। वे अपनी मिट्टी व अपने लोगों से प्रेम करने वाले व्यक्ति थे। उनके अवसान से 'हिंदी का नामवर' खो गया है। इससे जो रिक्तता अनुभव हो रही है, उसकी भरपाई कठिन है। शोक सभा में कार्यकारी कुलपति प्रो. कारुण्यकरा एवं कार्यकारी कुलसचिव प्रो. के. के. सिंह तथा उपस्थितों ने डॉ. सिंह की प्रतिमा पर पुष्प अर्पण कर तथा दो मिनट का मौन रखकर विनम्र अभिवादन किया गया।